10th/②

32 PAGES ANSWER BOOK

विषय Subject : हिन्दी

विषय कोड Subject Code : 401

परीक्षा का दिनांक /Date of Exam : 050224

उत्तर देने का माध्यम Medium of answering the paper : हिन्दी

प्रश्न पत्र का सेट Set of the Question paper : A

गोले भरने हेतु उदाहरण :-
सही तरीका :- ● ○ ○ ○
गलत तरीका :- ⊗ ⊘ ○ ◐ ◉ ○

नोट :- इस शीट को भरने के पूर्व पृष्ठ भाग में दिए गए उदाहरण देखें।

ID NO. 6643081
SUB. 401 HINDI
Med.
pkt. 2
Seq. 74010179

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करे।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	…में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	…में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

…mesh Kumar …gi (U.M.S.)
Govt.Ex.H.S.S. Madhav Nagar, KATNI
Mob.8319610873
V.No.7201545

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पद…

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

T.R. Kanojiya (M.S. Teacher)
G.H.S. HIRWARA (N.K.J.)
Mob.7999508145
Val.No. 7201634

जयन्त सिंह कश्यप (मा.शि.)
शास.उ.मा.वि. गणेशपुर
मो.नं. 97…253446
परीक्षक क्र. 7201701

योग पूर्व पृष्ठ / पृष्ठ 2 क अंक कुल अंक

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 1

उत्तर →

(i) सूरदास
(ii) सन् 1899
(iii) कोहरा
(iv) सुमित्रानंदन
(v) दो फुट
(vi) रामवृक्ष बे

प्रश्न - 2

उत्तर →

(i) सूरदास
(ii) 13-13
(iii) 4
(iv) 1900
(v) 8
(vi) 2

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 3

उ (i)	मैथिलीशरण गुप्त	-	पंचवटी
(ii)	रिसाई	-	क्रोध करना
(iii)	चौपाई	-	16
(iv)	एक अंक	-	एकांकी
(v)	शिवपूजन सहाय	-	माता का आँचल
(vi)	रामवृक्ष बेनीपुरी	-	मुजफ्फरपुर

प्रश्न - 4

उत्तर ⇒ (i) रामचरितमानस मानस का मुख्य छंद चौपाई छंद है।

(ii) विनय पत्रिका की रचना ब्रज भाषा में हुई है।

(iii) कामायनी जयशंकर प्रसाद की रचना है।

(iv) 'अट नहीं रही' कविता फागुन मास की मादकता को प्रगट करती है।

(v) कवि नागार्जुन का मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

निराला रचनावली मे आठ खंड है।

प्रश्न - 5

उत्तर → (i) सत्य
(ii) सत्य
(iii) असत्य
(iv) असत्य
(v) सत्य
(vi) सत्य

B
S
E

प्रश्न - 6

उत्तर → कवि नागार्जुन की दो रचनाओ के नाम इस प्रकार है :-
1. युगधारा
सतरंगी पंखो वाली

प्रश्न - 7

उत्तर → कवि सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ :-

कुल अंक

प्रश्न क्र.

(i) दो रचनाएँ → सूरसागर , साहित्य लहरी

(ii) भावपक्ष → सूरदास जी भक्तिकाल के सगुण धारा के कृष्णभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इन्होने श्री कृष्ण को आराध्य माना है। सूरदास जी ने श्री कृष्ण की बाल्यावस्थाओं का बड़ा ही सुंदर और मनोरम वर्णन किया है। सूरदास जी वात्सल्य रस सम्राट कहे जाते हैं।

प्रश्न - 8

उत्तर→ फसल कठिन परिश्रम का परिणाम है। वह स्वतः ही उत्पन्न नही हो जाती। उसे उत्पन्न करने के लिए सूर्य का प्रकाश, जल, हवा, श्रमिको के कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। एक अच्छी फसल प्राप्त करने मे उर्वरक मिट्टी की भी अहम भूमिका होती है।

प्रश्न - 9 (अथवा)

उत्तर→ स्मृति को पाथेय बनाने से कवि का आशय है कि वह अपने शेष जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करना चाहता है क्योकि भूतकाल की यादो से मन को शांति प्राप्त होती है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 10

उत्तर → आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य की परिभाषा "रसात्मकं वाक्यं काव्यम्" अर्थात रस युक्त वाक्यो को काव्य कहते हैं।

प्रश्न - 11

उत्तर → किसी काव्य को पढ़ने, सुनने या किसी नाटक को देखने से मन ... जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं।

प्रश्न - 12

उत्तर → रामवृक्ष बेनीपुरी का साहित्यिक परिचय -

(i) दो रचनाएँ → पतितो के देश मे, चिता के फूल

(ii) भाषा → रामवृक्ष बेनीपुरी जी की भाषा एकदम स्पष्ट हैं। वे ... बात को विभिन्न उदाहरणो, भावुक प्रसंगो आदि ... माध्यम से पाठक तक पहुँचा देते हैं। इनकी रचनाओ मे सा...

प्रश्न क्र.

कुरूतियो पर प्रहार किया गया है।

शैली → रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने अपनी रचनाओ मे विषय के अनुसार विभिन्न शैलियो को अपनाया है जैसे - वर्णात्मक शैली, भावात्मक शैली तथा प्रतीकात्मक शैली आदि।

B S E

प्रश्न - 13

उत्तर→ भगत की पुत्रवधू उन्हे अकेले इसलिए नही छोड़ना चाहती थी क्योंकि बेटे की मृत्यु के बाद उनका ख्याल रखने वाला कोई नही था वल पुत्रवधू की एही एकमात्र सहारा थी जिसे भी भगत उसके ाई के साथ भेजना चाहते थे।

प्रश्न - 14 (अथवा)

शहनाई का उपयोग अधिकतर मांगलिक कार्यो के लिए किया जाता चूँकि बिस्मिल्ला खाँ एक अच्छे शहनाई वादक थे। इसलिए उन्हे शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक कहा जाता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 15

उत्तर → गद्य की कोई 4 विधाओ के नाम इस प्रकार है:-
① नाटक
② एकांकी
③ निबंध
④ [illegible]ानी

प्रश्न - 16

उत्तर →

संधि	समास
① दो वर्णो के मेल को संधि कहते है।	① दो या दो से अधिक शब्दो को मिलाकर एक संक्षिप्त शब्द बनाने की विधि को समास कहते है।
② [illegible]धि के तीन प्रकार होते है।	② समास के छह: प्रकार [illegible] है।
③ संधि को तोड़ने पर संधि-विच्छेद होता है।	③ समास को तोड़ने पर समास-विग्रह होता है।

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 17

उत्तर → गंतोक को "मेहनतकश बादशाहों का शहर" इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसको सुंदर, आकर्षक, स्वच्छ तथा रमणीय बनाने मे वहाँ मेहनती श्रमिको के साथ - साथ आम जनता का भी सहयोग है।

B
S
E

प्रश्न - 18 (अथवा)

संकेत → जिसके अरुण - - - - - - - - - - - - - - - - - - मौन [illegible]।

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक क्षितिज भाग - II के पाठ "आत्मकथ्य" से लिया गया है। इसके रचयिता "जयशंकर प्रसाद" है।

प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश मे कवि ने अपनी प्रियतम की यादो को साझा किया है।

व्याख्या → कवि कहते है कि प्रियतम के लाल गालो की सुंदर छाया मे ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो उषा मधुर माया मे अपना सुहाग भर रही है। कवि कहते है कि

प्रश्न क्र.

प्रियतम की सुंदर स्मृतियाँ ही मुझ थके हुए राहगीर का सहारा बनी हुई है। आत्म आत्मकथा लिखवाने वाले हे मित्रो! तुम मेरी गुदड़ी की सीवन उधेड़कर क्या देखोगे, तुम्हे दुःख के अलावा कुछ नही मिलेगा। इस छोटी तथा दुःखो क भरी जिंदगी की बड़ी-बड़ी कहानियाँ कैसे बताऊँ। तुम मेरी भोली आत्मकथा को सुनकर मेरा क्या भला कर दोगे अर्थात तुम मेरे दुःखो को दूर नही कर सकते। अभी समय भी नही है मेरी अंतर्आत्मा सुई हुई है अर्थात मैं फिर दुःखो को याद नही कर सकता क्योंकि मेरी अब इतनी क्षमता नही है।

काव्य सौंदर्य → ① मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है।
② अनुप्रास अलंकार की प्रधानता है।
③ भावात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
④ भाषा सरल, सहज तथा भावो के अनुकूल है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 19 (अथवा)

संकेत → आषाढ़ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ यह कौन है ?

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक क्षितिज भाग-[illegible] पाठ "बालगोबिन भगत" से लिया गया है। इसके रचनाकार "रामवृक्ष बेनीपुरी" है।

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश मे ग्रामीण जीवन के दैनिक क्रियाकलापो का वर्णन किया गया है।

व्याख्या → कवि लेखक बता रहे है कि आषाढ का महीना चल रहा है। चारो ओर धीमी - धीमी बरसात हो रही है। पूरा गाँव खेतो मे काम कर रहा है। कुछ लोग हल चला रहे है तो कुछ फसल रोप रहे है। धान के खेतो मे पानी भर हुआ है जहाँ बच्चे खेल रहे है। औरते सुबह का जलपान लेने के लिए मेड़ पर बैठी है। पूरे आसमान मे बादल छाए हुए है, धूप का तो नामो निशान ही नही है। पूरब की ओर से ठंडी हवा चल रही है। ऐसे सबके कानो मे एक मधुर स्वर मे एक तेज तरंग सुनाई पड़ती है। सभी सोचने लगते है कि यह कौन है अर्थात किसका इतना मधुर स्वर है।

B
S
E

EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

विशेष → ① भाषा सरल, सहज तथा स्वाभाविक है।
② यहाँ प्रसाद तथा माधुर्य गुण की प्रधानता है।
③ बालगोबिन भगत के मधुर स्वर का वर्णन किया गया है।

प्रश्न - 20

"अनुशासन का महत्व"

B S E 30→ अनुशासन का अर्थ है नियम के पीछे चलना। हमारे जीवन मे अनुशासन का बहुत ही बड़ा महत्त्व है खासतौर पे विद्यार्थी जीवन मे। एक विद्यार्थी के जीवन मे अनुशासन का बहुत बड़ा महत्त्व होता है। विद्यार्थी को अपना हर कार्य समय पर करना चाहिए, उसे स्कूल नियमित रूप से जाना चाहिए तथा स्कूल मे अनुशासन मे रहना चाहिए, सभी बड़ो तथा गुरुजनो के साथ शिष्टता का व्यवहार करना चाहिए यही अनुशासन के तरीके है। अनुशासन के बिना कोई भी व्यक्ति अपने जीवन मे सफल नही हो सकता। अनुशासन का एक सबसे बड़ा उदाहरण हमारी पृथ्वी का है। इसमे दिन-रात नियमित रूप से होता है तथा ऋतुओ का भी अपना एक समय है अर्थात पृथ्वी पर सब कार्य अनुशासन मे होते है

60 + 7 = 67

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

अनुशासन व्यक्ति को बेहतर जीवन जीने मे सहायता करता है। अनुशासन मे रहने वाले लोग शिष्ट, स्वस्थ, ईमानदार, बुद्धिमान तथा समझदार होते है। अनुशासन ही लक्ष्य प्राप्त करने की सबसे बड़ी कुंजी है।

प्रश्न - 21

उत्तर-> (i) "हिमालय पहाड़"।

(ii) हिमालय को देखकर सारी सृष्टि के प्रति समभाव जाग्रत होता है।

(iii) वैदिक काल से ही हिमालय को बहुत पवित्र माना जाता है। इसकी विशालता मन मे आनंद और कृतत्त का भाव क भरती है। यह सारी सृष्टि के प्रति समभाव जाग्रत कराता है।

BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 22

उ० → सेवा मे,
श्रीमान जिलाधीश महोदय
जिला - कटनी (म० प्र०)

विषय – परीक्षाकाल मे ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक हेतु आवेदन-पत्र

महोदय जी,
सविनय नम्र निवेदन है कि अभी मध्यप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा स्तर की बोर्ड परीक्षाएँ चल रही है। सारे छात्र परीक्षा की तैयारी मे लगे है परंतु जिले मे ध्वनि विस्तारक यंत्रो के शोर से अध्ययन मे बाँधा उत्पन्न हो रही है।
अत: आपसे निवेदन है कि परीक्षा अवधि तक इन यंत्रो पर रोक लगाने का आदेश जारी करे।

धन्यवाद)

भवदीया
रेखा रेबारी
कक्षा - दसवीं 'द'
दिनाँक - 05/02/24
जिला - कटनी

B S E

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 23

वृक्षारोपण

रूपरेखा

① प्रस्तावना
② भारतीय संस्कृति तथा वृक्ष
③ वृक्षो से लाभ
④ वृक्षो का विनाश
⑤ वृक्षो के बचाव के उपाय
⑥ उपसंहार

① प्रस्तावना → हमारी पृथ्वी पर वृक्षो का बहुत बड़ा महत्त्व है। वृक्ष नही तो, जीवन नही। वृक्ष है तो, सब कुछ है वृक्षो के कारण ही पृथ्वी इतनी भरी-भरी, सुंदर तथा आकर्षक है। वृक्ष मानव, पशु-पक्षी तथा जीव-जंतु आदि के जीवन दाता है।

② भारतीय संस्कृति तथा वृक्ष → आज तथा वैदिक काल से ही वृक्षो का भारतीय संस्कृति के साथ गहरा नाता है। हमारे कई ऋषि मुनियो ने पेड़ो की छाया मे बैठकर ज्ञान अर्जित किया था और मानवो को उपलब्ध कराया

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

हमारे कई सारे गुरुकुल वृक्षो की गोद मे ही थे। भारतीय संस्कृति मे तो वृक्षो को भगवान की तरह पूजा जाता है। पीपल पेड़ की पूजा की जाती है। आदिवासी जनजाति पेड़ो को क्षति नही आने देते बल्कि उनकी बहुत रक्षा करते है।

③ वृक्षो से लाभ → वृक्षो से हमे बहुत सारे लाभ होते है। जैसे - फल-फूल, दवाईया, स्वच्छ हवा, ईंधन हेतु लकड़ियाँ आदि। वृक्ष वृ० वर्षा कराने मे अहम भूमिका निभाते है। वृक्ष मिट्टी के कटाव को भी रोकते है तथा मृदा संरक्षण करते है। वातावरण को प्रदूषण से बचाकर स्वच्छ बनाते है तथा शुद्ध प्राणवायु देते है।

B
S
E

④ वृक्षो का विनाश → मानव अपने स्वार्थ मे आकर वृक्षो की अंधाधुंध कटाई कर रहा है। घर बनाने के लिए, ईंधन के लिए, फर्नीचर के लिए तथा कई अन्य सामग्री के लिए पेड़ो को नियमित रूप से काटता ही जा रहा है। यदि पेड़ो की रक्षा नही की गई तो एक नई दिन पृथ्वी पर जीवन नही बचेगा। सबकुछ नष्ट हो जाएगा। क्योकि पृथ्वी का सारा प्राणीजगत, व वृक्षो पर ही निर्भर करता है। वृक्ष नही रहेंगे तो पृथ्वी का संतुलन बिगड़ जाएगा।

71 75

17 क अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(5) वृक्षो के बचाव के उपाय → लोगो को वृक्षारोपकण के लिए जागरूक करना चाहिए । हमे अधिक - से - अधिक पेड़ लगाने चाहिए ताकि हरियाली बनी रहे झूमी कृषि पर रोक लगा देना चाहिए। वनो को तीन श्रैणियो मे बाँटकर उनकी रक्षा की जा सकती है।

(6) उपसंहार → हमारी पृथ्वी की हरियाली का कारण एकमात्र वृक्ष ही है। वृक्ष हमारे लिए सबसे अनमोल वस्तु है इस लिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनकी हफाजत करे। और लोगो को सूचित करे कि वृक्षो की कटाई से कितनी हानियाँ है वृक्षो के कारण ही पृथ्वी पर जीवन है। यदि वृक्ष नही तो, जीवन नही क्योंकि जीवन जीने के लिए सारी महत्वपूर्ण चीजे या आवश्यकताएँ वृक्षो से ही प्राप्त की जाती है।

BSE